



Buddha Pujari (Hindi)

तख्तगीश शुब

बुद्धा पुजारी

- दुन्या की बदहली 3
- आगाजे दा'वते इस्लाम 7
- गारे हिरा में इबादत 5
- मुसल्मान होते ही नेकी की धूम 8
- नाखून काटने के मदनी फूल 21

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, वानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा मौलाना अबू विलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़दिरी रज़वी

دعوتِ نبویہ
العالمیہ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دامت بركاتهم العالیه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَذْخِرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (المستطرف ج 1 ص 10، دارالفکر بیروت)

नोट : अब्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ताल्लिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मरिफ़रत
13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



बुद्धा पुजारी

येह रिसाला (बुद्धा पुजारी)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دامت بركاتهم العالیه ने
उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल
ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।
इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए
मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बुद्धा पुजारी¹

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (24 सफ़हात) मुकम्मल
 पढ़ लीजिये بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ दुन्या व आख़िरत के बे शुमार
 मनाफ़ेअ हासिल होंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन औफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरबी है कि शह-शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक मर्तबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए । सज्दे को इतना तवील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने रूहे मुबारका कब्ज़ न फ़रमा ली हो । चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा । जब सरे अक़दस उठाया तो फ़रमाया : “ ऐ अब्दुरहमान ! क्या हुवा ? ” मैं ने अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो

دينه

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक “दा’वते इस्लामी” के आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) में होने वाले यकुम रबीउन्नूर शरीफ़ (1430 हि.) के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तहरीरन हाज़िरे ख़िदमत है ।

मजलिसे मक्तबतुल मदीना

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (ترمذی)

हुए तीन बार त्वाफ़ करते, इस के बा'द सरदारे कौम या बुद्धा पुजारी बड़ी फुरती के साथ उस भेंट (या'नी इन्सान या ऊंट जो भी हो) पर पहला वार करता और उस का कुछ खून पीता। इस के बा'द हाज़िरीन उस सफ़ेद ऊंट या इन्सान पर टूट पड़ते और उस की तिक्का बोटियां कर के उस को कच्चा ही कच्चा खा डालते ! अल गरज अरब में हर तरफ़ वहशत व बरबरियत का दौर दौरा था। लड़ाइयों में आदमियों को ज़िन्दा जला देना, औरतों का पेट चीर डालना, बच्चों को ज़ब्ह करना, उन को नेज़ों पर उछाल देना उन के नज़्दीक मा'यूब न था।

दुन्या की बदहाली

येह हालत सिर्फ़ अरब के साथ ही मख़सूस न थी बल्कि तक़ीबन पूरी दुन्या में तारीकी छाई हुई थी। चुनान्चे अहले फ़ारस (या'नी ईरानी) अक्सर आग की पूजा करने और अपनी माओं के साथ वती करने में मशगूल थे। ब कस्रत तुर्क शबो रोज़ बस्तियां उजाड़ने और लूटमार करने में मस्रूफ़ थे और बुत परस्ती और लोगों पर जुल्मो जफ़ा उन का वतीरा था। हिन्दुस्तान के कसीर अफ़ाद बुतों की पूजापाट और खुद को आग में जला देने के इलावा कुछ न जानते थे। बहर कैफ़ हर तरफ़ कुफ़्र व जुल्मत का घटा टोप अंधेरा छाया हुवा था। काफ़िर इन्सान बदतर अज हैवान हो चुका था। चुनान्चे

आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की विलादत हो गई

इस अ़ालमगीर जुल्मत में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर, आमिना के पिसर, हबीबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कुल जहां के लिये हादी व रहबर बन कर वाकिअए

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह ﷻ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है ! (طبرانی)

अस्हाबे फ़ील के पचपन (55) दिन के बा'द 12 रबीउन्नूर ब मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 सि.ई.¹ बरोज़ पीर सुब्हे सादिक़ के वक़्त कि अभी बा'ज़ सितारे आस्मान पर टिमटिमा रहे थे, चांद सा चेहरा चमकाते, कस्तूरी की खुशबू महकाते, ख़तना शुदा, नाफ़ बुरीदा, दोनों शानों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत दरख़्शां, सुरमगीं आंखें, पाकीज़ा बदन दोनों हाथ ज़मीन पर रखे हुए, सरे पाक आस्मान की तरफ़ उठाए हुए दुन्या में तशरीफ़ लाए ।

(الْمَوَاهِبُ اللّٰدُنْيَا لِلْقِسْطِ لَانِي ج ١ ص ٦٦-٧٥ وغيره دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

रबीउल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया
ख़ुदा ने ना ख़ुदाई की ख़ुद इन्साने सफ़ीने की
जहां में ज़शने सुब्हे ईद का सामान होता था
सदा हातिफ़ ने दी ऐ साकिनाने ख़ि़त्तए हस्ती !
मुबारक बाद है उन के लिये जो जुल्म सहते हैं
मुबारक बाद बेवाओं की हसरत ज़ा निगाहों को
जईफ़ों बे कसों आफ़त नसीबों को मुबारक हो
मुबारक ठोकरें खा खा के पैहम गिरने वालों को
मुबारक हो कि दौरै राहतो आराम आ पहुंचा
मुबारक हो कि ख़त्मुल मुरसलीं तशरीफ़ ले आए

दुआओं की क़बूलियत को हाथों हाथ ले आया
कि रहमत बन के छाई बारहवीं शब इस महीने की
उधर शैतान तन्हा अपनी नाकामी पे रोता था
हुई जाती है फिर आबाद येह उजड़ी हुई बस्ती
कहीं जिन को अमां मिलती नहीं बरबाद रहते हैं
असर बख़्शा गया नालों को फ़रियादों को आहों को
यतीमों को गुलामों को ग़रीबों को मुबारक हो
मुबारक दशते गुरबत में भटकते फिरने वालों को
नजाते दाइमी की शक़ल में इस्लाम आ पहुंचा
जनाबे रहमतुल्लिल आलमीं तशरीफ़ ले आए

बसद अन्दाजे यक्ताई ब ग़ायत शाने जैबाई

अमीं बन कर अमानत आमिना की गोद में आई

1 : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 26 सफ़हा 414 मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये ।

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अबि सन्नी)

दुन्या में तशरीफ़ लाते ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सज्दा किया । उस वक़्त होंटों पर येह दुआ़ा जारी थी : **يَا رَبِّ هَبْ لِي أُمَّتِي** : परवर्द गार ! मेरी उम्मत मुझे हिबा कर दे ।

يَا رَبِّ هَبْ لِي أُمَّتِي कहते हुए पैदा हुए

हक़ ने फ़रमाया कि बख़शा وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَام

गारे हिरा में इबादत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले अरब की भारी अक्सरियत के हालात आप सुन चुके । ऐसी वहूशी क़ौम में रहते हुए भी हमारे मक्की मदनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कभी किसी मजलिसे लहवो लड़ब (या'नी खेलकूद) में शरीक नहीं हुए और सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ाते सितूदा सिफ़ात हर क़िस्म की बुराई से दूर ही रही । सरकारे अ़ाली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अख़लाके हमीदा से मुत्तसिफ़ और सिद्क़ो अमानत में इस क़दर मुतअरिफ़ हुए कि खुद आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की क़ौम आप صَلَّى اللهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को “सादिक्” और “अमीन” के लक़ब से याद करती थी । सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गारे हिरा में (जो मक्कए मुकर्रमा **رَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** से मिना शरीफ़ को जाते हुए बाई तरफ़ को आता है) क़ियाम फ़रमाते और वहां कई कई रोज़ तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मशगूल रहते ।

फरमाने मुस्फ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

इज़हारे नुबुव्वत

शाहे मक्कतुल मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनतुल मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्र शरीफ़ जब चालीस साल की हुई उस वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इज़हारे नुबुव्वत की इजाज़त मिली । वरना सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तो उस वक़्त भी नबी थे जब कि अभी हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَى تَيْبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तख़लीक़ (या'नी पैदाइश) भी न हुई थी । चुनान्वे नबिय्ये मोहतरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मुहूतशम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमतते सरापा अज़मत में अर्ज की गई : **مَتَى كُنْتُ نَبِيًّا** : या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ कब से नबी हैं ? फ़रमाया : **وَأَدَمُ يَبْنَؤُ الرُّوحِ وَالْجَسَدِ** : या'नी (मैं तो उस वक़्त भी नबी था जब कि अभी) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) रूह और जिस्म के दरमियान थे ।

(المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٣ ص ٥٠٨ حديث ٤٢٦٥ دارالمعرفة بيروت)

आदम का पुतला न बना था, जब भी वोह दुन्या में नबी थे

है उन से आगाज़े रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पहली वह्य

22 फ़रवरी 610 सि.ई. की वोह अज़ीम साअत आई जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हस्बे मा'मूल ग़ारे हिरा को अपनी बरकतों से नवाज़ रहे थे । उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पहली बार येह आयाते मुक़द्दसा बतौरे वह्य ले कर हाज़िरे ख़िदमत हुए :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي
خَلَقَ ۝۱ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ
عَلَقٍ ۝۲ اِقْرَأْ وَرَبُّكَ
الْأَكْرَمُ ۝۳ الَّذِي عَلَّمَ
بِالْقَلَمِ ۝۴ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ
مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝۵

(प ३०, ५०, ६०)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के नाम से जिस ने पैदा किया आदमी को खून की फटक से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) ही सब से बड़ा करीम है जिस ने क़लम से लिखना सिखाया। आदमी को सिखाया जो न जानता था।

फिर कुछ अर्से बा'द येह आयाते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝۱ قُمْ
فَأَنْذِرْ ۝۲ وَرَبُّكَ فَكَرِيمٌ ۝۳
وَشِيَابُكَ فَطَهِّرْ ۝۴ وَالرُّجْزَ
فَاهْجُرْ ۝۵

(प २९, ५०, ६०)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ बालापोश ओढ़ने वाले ! खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ और अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) ही की बड़ाई बोलो और अपने कपड़े पाक रखो और बुतों से दूर रहो।

आगाज़े दा 'वते इस्लाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब इस हुक्म "قُمْ فَأَنْذِرْ" या'नी "खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ" से सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डराना और उन तक दा'वते इस्लाम पहुंचाना फ़र्ज हो चुका था मगर हुनूज़ अलल ए'लान दा'वते इलल्लाह عَزَّوَجَلَّ (या'नी अल्लाह की तरफ़ बुलाने) का हुक्म न था। लिहाज़ा आमिना के लाल, महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़िलहाल बा

फरमाने मुस्त्फा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

ए'तिमाद लोगों में चुपके चुपके सिल्सिलए तब्लीग का आगाज फरमाया।
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नेकी की दा'वत पर कई मर्द व औरत ईमान ले आए। मर्दों में सब से पहले हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, लड़कों में अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तजा शेर ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ, ख़वातीन में उम्मूल मुअमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا, आज़ाद शुदा गुलामों में हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, गुलामों में हज़रते सय्यिदुना बिलाले हब्शी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ईमान ले आए।

मुसल्मान होते ही नेकी की दा'वत की धूम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ईमान लाते ही नेकी की दा'वत की धूमें मचानी शुरूअ कर दी। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की इन्फ़िरादी कोशिश से पांच वोह हज़रात मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए जिन का शुमार अशरए मुबश्शरह में होता है। इन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ﴿3﴾ हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ﴿4﴾ हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन औफ़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अव्वाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ। “अशरए मुबश्शरह” उन दस सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कहते हैं जिन को हमारे मक्की मदनी मीठे मीठे मुस्त्फा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दुन्या ही

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

में जन्नत की बिशारत इनायत फ़रमा दी थी। मेरे आका आ'ला हज़रत
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :

वोह दसों जिन को जन्नत का मुज्दा मिला

उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम

काश ! हम भी नेकी की दा'वत देने वाले बनें

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ को नेकी की दा'वत का किस क़दर ज़ब्बा था कि दामने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में पनाह मिलते ही फ़ौरन दूसरों को भी सरकारे मोहतरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दामने करम से वाबस्ता करने की धुन लग गई। उन्हें कितना ज़बर दस्त एहसास था, कितनी क़द्र थी इस्लाम की, ऐ काश ! हमारे दिल में भी नेकी की दा'वत की अहम्मियत जा गुर्जी हो जाए। काश ! हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों के मज़हर जन्नत की तरफ़ अपने उन भोले भाले इस्लामी भाइयों को भी ले चलने की कोशिशें तेज़ तर कर दें जो गुनाहों की अंधेरी वादियों में भटक रहे हैं। ऐ काश ! हमें भी फ़िरंगी फ़ेशन की यलगार में घिरे हुए मुसलमानों को मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मीठी मीठी सुन्नतों की तरफ़ बुलाने का ज़ब्बा नसीब हो जाए। इस मदनी काम या'नी नेकी की दा'वत को अ़ाम करने का एक मुअस्सिर ज़रीअ़ा अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत भी है। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में हफ़्ते में एक दिन मख़्सूस कर के दुकानों, घरों वग़ैरा पर नेकी की दा'वत पेश की जाती

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (अबुयुसुफ़)

है। बा'ज इस्लामी भाई हफ़्ते में दो बार, तीन बार भी बल्कि रोज़ाना भी देते हैं और बा'ज आका के दीवाने तो जब देखा तन्हा ही नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहते हैं! आइये तन्हा नेकी की दा'वत देने या'नी "इन्फ़िरादी कोशिश" करने के मुतअल्लिक़ एक ईमान अफ़ोज़ मदनी बहार सुनते चलें चुनान्चे

एक हेरोइन्ची की आपबीती

एक इस्लामी भाई ने जो कुछ हल्फ़िय्या (या'नी ब क़सम) बयान दिया उस का खुलासा अर्ज करता हूँ : तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के तीन³ रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ का वाकिअ है। हम चन्द दोस्त रस्मी तौर पर इज्तिमाअ में हाज़िर तो हो गए मगर बयानात की बरकात छोड़ कर रात इज्तिमाअ गाह के बाहर एक जगह बैठ कर ख़ूब सिगरेट के कश और गपशप लगाने में मशगूल हुए इसी में जिन्न भूत के सन्सनी ख़ैज वाकिआत भी छिड़ गए, जिस की बिना पर कुछ डरावना सा माहोल बन गया। इतने में सब्ज इमामे वाले एक अधेड़ उम्र के इस्लामी भाई ने क़रीब आ कर हमें सलाम किया और फ़रमाने लगे : अगर इजाज़त हो तो कुछ अर्ज करूँ! हम ने कहा : फ़रमाइये ! उन्होंने ने बड़े हमदर्दाना लहजे में कहा : आप हज़रात के इज्तिमाअ में शिर्कत का अन्दाज़ देख कर मुझे अपनी पिछली जिन्दगी याद आ गई ! मैं ने सोचा कि अपनी आपबीती गोश गुज़ार करूँ कि शायद आप लोगों को इस में कुछ इब्रत के मदनी फूल मिल जाएं। फिर उन्होंने ने अपनी दास्ताने हिदायत निशान बयान

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ السَّلَامُ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझे पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्नूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

करनी शुरू की : पहले पहल मेरी सिगरेट नोशी की आदत पड़ी और फिर बुरे दोस्तों की सोहबत की नुहूसत ने मुझे चरस और हेरोईन जैसे मोहलिक नशे का आदी बना दिया, आह ! मैं सोलह साल तक नशे का आदी रहा । येह बताते हुए उन की आवाज़ भरा गई, मगर बयान जारी रखते हुए कहा : मेरी बुरी आदतों से बेज़ार हो कर मुझे घर से निकाल दिया गया । मैं फुटपाथ पर सोता और कचरे के ढेर से उठा कर या मांग कर खाता । आप को शायद यकीन न आए कि मैं ने एक ही लिबास में सोलह साल गुज़ार दिये ! मेरी कैफ़ियत बिल्कुल एक पागल की तरह हो चुकी थी !

एक मुक़द्दस रात का किस्सा है, ग़ालिबन वोह रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब थी । मैं बंद नसीब उसी गन्दी हालत में बंद मस्त एक गली के कोने में कचरा कूडी के पास लैटा हुआ था कि सलाम की आवाज़ पर चौंका ! जब आंखें मलते हुए देखा तो मेरे सामने सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए दो इस्लामी भाई खड़े मुस्कुरा रहे थे उन्होंने ने बड़ी महबूबत से मेरा नाम पूछा, शायद ज़िन्दगी में पहली बार किसी ने इतनी महबूबत से मुझे मुख़ातब किया था । फिर इन्फ़रादी कोशिश करते हुए उन्होंने ने शबे क़द्र की अज़मत से मुतअल्लिक़ बड़ी प्यारी प्यारी बातें बताई । मैं उन के अपनाइयत वाले अन्दाज़ और हुस्ने अख़्लाक़ की बिना पर वैसे ही मुतअस्सिर हो चुका था, मज़ीद उन की शहद से भी मीठी मीठी मदनी गुफ़्तगू तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गई, मैं उन के साथ मस्जिद की तरफ़ चल पड़ा । मस्जिद के गुस्ल खाने में अपना मैला चिक्कट लिबास उतारा और गुस्ल कर के साफ़ सुथ्रे कपड़े

फ़रमाने मुस्त्फ़ा : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझे तक पहुंचता है।
(طبرانی)

पहन कर 16 साल बा 'द जब पहली बार मस्जिद में दाखिल हो कर नमाज़ के लिये मैं ने निख्यत बांधी तो अपने आंसू न रोक सका, रो रो कर मैं ने नशे और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली और दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ घर वालों ने मुझे वापस ले लिया। मैं कादिरिय्या रज़विय्या सिल्सिले में दाखिल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأَكْرَم का मुरिद बन गया। मैं ने येह निख्यत कर ली कि अब हर कीमत पर नशे की आदत छुड़ाऊंगा। इस के लिये मुझे बड़ी आज्माइशों से गुज़रना पड़ा, मैं तक्लीफ़ के बाइस चीख़ता, बुरी तरह तड़पता, घर वाले मेरी येह हालत देख कर रो पड़ते। बा'ज़ लोग मशवरा देते कि हेरोइन का एक आध सिगरेट ही पी लो ! मगर मैं ने ऐसा न किया कि इस तरह तो मैं फिर इस नुहूसत में गिरिफ़्तार हो जाऊंगा बल्कि घर वालों से कहता कि ज़रूरतन मुझे चारपाई से बांध दिया करो। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता बेहतरी आने लगी और मुझे नशे से मुकम्मल तौर पर नजात मिल गई और मैं आज दा 'वते इस्लामी का एक अदना सा मुबल्लिग़ हूँ। उन की दास्ताने इब्रत निशान सुन कर हम सब अशकबार हो गए, हम ने साबिका गुनाहों से तौबा की और दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गए। मैं येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ एक डिवीज़न के मदनी इन्ज़ामात के जिम्मेदार की हैसियत से नेकी की दा 'वत की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूँ।

छोड़ें बंद मस्तियां, और नशे बाज़ियां जामे उल्फ़त पियें, काफ़िले में चलो

ऐ शराबी तू आ, आ जुवारी तू आ सब सुधरने चलें, काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الايمان)

कुफ़्र के ऐवानों में खलबली

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शाहे खैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तीन साल तक इशाअते इस्लाम के लिये खुपयतन (या'नी छुप कर) इन्फ़रादी कोशिश फ़रमाई । फिर जब हुकमे खुदा वन्दी (या'नी छुप कर) से अलल ए'लान इस्लाम का पैग़ाम देना शुरूअ किया और बुत परस्ती की मजम्मत बयान करने लगे तो कुफ़्र के ऐवानों में खलबली पड़ गई । सरदाराने कुरैश एक वफ़द की सूरत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चचा अबू तालिब के पास आए और अपनी शिकायत पेश की, कि आप के भतीजे साहिब हमारे मा'बूदों को बुरा भला कहने के साथ साथ हमारे आबाओ अज्दाद को गुमराह और हम लोगों को अहमक ठहराते हैं, आप बराए मेहरबानी उन को समझा दीजिये कि वोह ऐसा न करें, अगर आप समझा नहीं सकते तो बीच में से हट जाइये हम खुद उन्हें समझ लेंगे । अबू तालिब अगर्चे ईमान तो न लाए लेकिन अपने भतीजे या'नी सय्यिदुना मुहम्मदुरसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बेहद महब्वत करते थे लिहाजा कुरैश के सरदारों को नरमी के साथ समझा बुझा कर रुख़सत कर दिया ।

सीधे हाथ में सूरज.....

दा'वते इस्लाम का सिल्लिसला जोरो शोर से जारी रहा, चुनान्चे कुफ़फ़रे कुरैश के अन्दर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ख़िलाफ़ बुग़ज़ो अदावत की आग मज़ीद भड़क उठी, वोह फिर वफ़द बना कर अबू

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

तालिब के पास आए और धमकी आमेज़ लहजे में कहने लगे : “अबू तालिब ! हम ने तुम से कहा था कि अपने भतीजे को समझा दो मगर तुम ने उन को नहीं समझाया, हम अपने मा'बूदों और आबाओ अज्दाद की तौहीन बरदाशत नहीं कर सकते, हम तुम्हारी इज़्ज़त करते हैं, तुम उन को अब भी रोक दो, अगर नहीं रोकना चाहते तो तुम भी हमारे साथ मुक़ाबले के लिये तय्यार हो जाओ ताकि दोनों फ़रीक़ में से एक का फ़ैसला हो जाए ।” वोह लोग येह धमकी दे कर चले गए । अबू तालिब ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बुला कर अर्ज़ की : “ऐ मेरे प्यारे भतीजे ! कौम ने मुझे आप के बारे में येह येह शिकायात की हैं, मेहरबानी कर के बाज़ आ जाइये । अपने आप पर भी और मुझ पर भी रहूम कीजिये ।” येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जवाबन इशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे चचा ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह लोग मेरे सीधे हाथ में सूरज और उलटे हाथ में चांद भी ला कर रख दें, जब भी मैं इस काम को हरगिज़ हरगिज़ न छोड़ूंगा यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे (या 'नी इस्लाम को) ग़ालिब कर दे या मैं इस काम में अपनी जान दे दूं ।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ रो पड़े और वापस जाने लगे, तो अपने प्यारे भतीजे صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येह अज़्मो इस्तिक्लाल देख कर अबू तालिब को जोश आ गया और बुला कर कहने लगे : “ऐ भतीजे صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! ख़ूब दिल खोल कर अपने दीन की तब्लीग़ कीजिये, अहले कुरैश आप का बाल भी बीका न कर सकेंगे ।”

(السِّيَرَةُ النَّبَوِيَّةُ لِأَيْنِ هَشَّامٍ ص ١٠٣، ١٠٤، ١٠٥، ١٠٦، ١٠٧، ١٠٨، ١٠٩، ١١٠، ١١١، ١١٢، ١١٣، ١١٤، ١١٥، ١١٦، ١١٧، ١١٨، ١١٩، ١٢٠، ١٢١، ١٢٢، ١٢٣، ١٢٤، ١٢٥، ١٢٦، ١٢٧، ١٢٨، ١٢٩، ١٣٠، ١٣١، ١٣٢، ١٣٣، ١٣٤، ١٣٥، ١٣٦، ١٣٧، ١٣٨، ١٣٩، ١٤٠، ١٤١، ١٤٢، ١٤٣، ١٤٤، ١٤٥، ١٤٦، ١٤٧، ١٤٨، ١٤٩، ١٥٠، ١٥١، ١٥٢، ١٥٣، ١٥٤، ١٥٥، ١٥٦، ١٥٧، ١٥٨، ١٥٩، ١٦٠، ١٦١، ١٦٢، ١٦٣، ١٦٤، ١٦٥، ١٦٦، ١٦٧، ١٦٨، ١٦٩، ١٧٠، ١٧١، ١٧٢، ١٧٣، ١٧٤، ١٧٥، ١٧٦، ١٧٧، ١٧٨، ١٧٩، ١٨٠، ١٨١، ١٨٢، ١٨٣، ١٨٤، ١٨٥، ١٨٦، ١٨٧، ١٨٨، ١٨٩، ١٩٠، ١٩١، ١٩٢، ١٩٣، ١٩٤، ١٩٥، ١٩٦، ١٩٧، ١٩٨، ١٩٩، ٢٠٠، ٢٠١، ٢٠٢، ٢٠٣، ٢٠٤، ٢٠٥، ٢٠٦، ٢٠٧، ٢٠٨، ٢٠٩، ٢١٠، ٢١١، ٢١٢، ٢١٣، ٢١٤، ٢١٥، ٢١٦، ٢١٧، ٢١٨، ٢١٩، ٢٢٠، ٢٢١، ٢٢٢، ٢٢٣، ٢٢٤، ٢٢٥، ٢٢٦، ٢٢٧، ٢٢٨، ٢٢٩، ٢٣٠، ٢٣١، ٢٣٢، ٢٣٣، ٢٣٤، ٢٣٥، ٢٣٦، ٢٣٧، ٢٣٨، ٢٣٩، ٢٤٠، ٢٤١، ٢٤٢، ٢٤٣، ٢٤٤، ٢٤٥، ٢٤٦، ٢٤٧، ٢٤٨، ٢٤٩، ٢٥٠، ٢٥١، ٢٥٢، ٢٥٣، ٢٥٤، ٢٥٥، ٢٥٦، ٢٥٧، ٢٥٨، ٢٥٩، ٢٦٠، ٢٦١، ٢٦٢، ٢٦٣، ٢٦٤، ٢٦٥، ٢٦٦، ٢٦٧، ٢٦٨، ٢٦٩، ٢٧٠، ٢٧١، ٢٧٢، ٢٧٣، ٢٧٤، ٢٧٥، ٢٧٦، ٢٧٧، ٢٧٨، ٢٧٩، ٢٨٠، ٢٨١، ٢٨٢، ٢٨٣، ٢٨٤، ٢٨٥، ٢٨٦، ٢٨٧، ٢٨٨، ٢٨٩، ٢٩٠، ٢٩١، ٢٩٢، ٢٩٣، ٢٩٤، ٢٩٥، ٢٩٦، ٢٩٧، ٢٩٨، ٢٩٩، ٣٠٠، ٣٠١، ٣٠٢، ٣٠٣، ٣٠٤، ٣٠٥، ٣٠٦، ٣٠٧، ٣٠٨، ٣٠٩، ٣١٠، ٣١١، ٣١٢، ٣١٣، ٣١٤، ٣١٥، ٣١٦، ٣١٧، ٣١٨، ٣١٩، ٣٢٠، ٣٢١، ٣٢٢، ٣٢٣، ٣٢٤، ٣٢٥، ٣٢٦، ٣٢٧، ٣٢٨، ٣٢٩، ٣٣٠، ٣٣١، ٣٣٢، ٣٣٣، ٣٣٤، ٣٣٥، ٣٣٦، ٣٣٧، ٣٣٨، ٣٣٩، ٣٤٠، ٣٤١، ٣٤٢، ٣٤٣، ٣٤٤، ٣٤٥، ٣٤٦، ٣٤٧، ٣٤٨، ٣٤٩، ٣٥٠، ٣٥١، ٣٥٢، ٣٥٣، ٣٥٤، ٣٥٥، ٣٥٦، ٣٥٧، ٣٥٨، ٣٥٩، ٣٦٠، ٣٦١، ٣٦٢، ٣٦٣، ٣٦٤، ٣٦٥، ٣٦٦، ٣٦٧، ٣٦٨، ٣٦٩، ٣٧٠، ٣٧١، ٣٧٢، ٣٧٣، ٣٧٤، ٣٧٥، ٣٧٦، ٣٧٧، ٣٧٨، ٣٧٩، ٣٨٠، ٣٨١، ٣٨٢، ٣٨٣، ٣٨٤، ٣٨٥، ٣٨٦، ٣٨٧، ٣٨٨، ٣٨٩، ٣٩٠، ٣٩١، ٣٩٢، ٣٩٣، ٣٩٤، ٣٩٥، ٣٩٦، ٣٩٧، ٣٩٨، ٣٩٩، ٤٠٠، ٤٠١، ٤٠٢، ٤٠٣، ٤٠٤، ٤٠٥، ٤٠٦، ٤٠٧، ٤٠٨، ٤٠٩، ٤١٠، ٤١١، ٤١٢، ٤١٣، ٤١٤، ٤١٥، ٤١٦، ٤١٧، ٤١٨، ٤١٩، ٤٢٠، ٤٢١، ٤٢٢، ٤٢٣، ٤٢٤، ٤٢٥، ٤٢٦، ٤٢٧، ٤٢٨، ٤٢٩، ٤٣٠، ٤٣١، ٤٣٢، ٤٣٣، ٤٣٤، ٤٣٥، ٤٣٦، ٤٣٧، ٤٣٨، ٤٣٩، ٤٤٠، ٤٤١، ٤٤٢، ٤٤٣، ٤٤٤، ٤٤٥، ٤٤٦، ٤٤٧، ٤٤٨، ٤٤٩، ٤٥٠، ٤٥١، ٤٥٢، ٤٥٣، ٤٥٤، ٤٥٥، ٤٥٦، ٤٥٧، ٤٥٨، ٤٥٩، ٤٦٠، ٤٦١، ٤٦٢، ٤٦٣، ٤٦٤، ٤٦٥، ٤٦٦، ٤٦٧، ٤٦٨، ٤٦٩، ٤٧٠، ٤٧١، ٤٧٢، ٤٧٣، ٤٧٤، ٤٧٥، ٤٧٦، ٤٧٧، ٤٧٨، ٤٧٩، ٤٨٠، ٤٨١، ٤٨٢، ٤٨٣، ٤٨٤، ٤٨٥، ٤٨٦، ٤٨٧، ٤٨٨، ٤٨٩، ٤٩٠، ٤٩١، ٤٩٢، ٤٩٣، ٤٩٤، ٤٩٥، ٤٩٦، ٤٩٧، ٤٩٨، ٤٩٩، ٥٠٠، ٥٠١، ٥٠٢، ٥٠٣، ٥٠٤، ٥٠٥، ٥٠٦، ٥٠٧، ٥٠٨، ٥٠٩، ٥١٠، ٥١١، ٥١٢، ٥١٣، ٥١٤، ٥١٥، ٥١٦، ٥١٧، ٥١٨، ٥١٩، ٥٢٠، ٥٢١، ٥٢٢، ٥٢٣، ٥٢٤، ٥٢٥، ٥٢٦، ٥٢٧، ٥٢٨، ٥٢٩، ٥٣٠، ٥٣١، ٥٣٢، ٥٣٣، ٥٣٤، ٥٣٥، ٥٣٦، ٥٣٧، ٥٣٨، ٥٣٩، ٥٤٠، ٥٤١، ٥٤٢، ٥٤٣، ٥٤٤، ٥٤٥، ٥٤٦، ٥٤٧، ٥٤٨، ٥٤٩، ٥٥٠، ٥٥١، ٥٥٢، ٥٥٣، ٥٥٤، ٥٥٥، ٥٥٦، ٥٥٧، ٥٥٨، ٥٥٩، ٥٦٠، ٥٦١، ٥٦٢، ٥٦٣، ٥٦٤، ٥٦٥، ٥٦٦، ٥٦٧، ٥٦٨، ٥٦٩، ٥٧٠، ٥٧١، ٥٧٢، ٥٧٣، ٥٧٤، ٥٧٥، ٥٧٦، ٥٧٧، ٥٧٨، ٥٧٩، ٥٨٠، ٥٨١، ٥٨٢، ٥٨٣، ٥٨٤، ٥٨٥، ٥٨٦، ٥٨٧، ٥٨٨، ٥٨٩، ٥٩٠، ٥٩١، ٥٩٢، ٥٩٣، ٥٩٤، ٥٩٥، ٥٩٦، ٥٩٧، ٥٩٨، ٥٩٩، ٦٠٠، ٦٠١، ٦٠٢، ٦٠٣، ٦٠٤، ٦٠٥، ٦٠٦، ٦٠٧، ٦٠٨، ٦٠٩، ٦١٠، ٦١١، ٦١٢، ٦١٣، ٦١٤، ٦١٥، ٦١٦، ٦١٧، ٦١٨، ٦١٩، ٦٢٠، ٦٢١، ٦٢٢، ٦٢٣، ٦٢٤، ٦٢٥، ٦٢٦، ٦٢٧، ٦٢٨، ٦٢٩، ٦٣٠، ٦٣١، ٦٣٢، ٦٣٣، ٦٣٤، ٦٣٥، ٦٣٦، ٦٣٧، ٦٣٨، ٦٣٩، ٦٤٠، ٦٤١، ٦٤٢، ٦٤٣، ٦٤٤، ٦٤٥، ٦٤٦، ٦٤٧، ٦٤٨، ٦٤٩، ٦٥٠، ٦٥١، ٦٥٢، ٦٥٣، ٦٥٤، ٦٥٥، ٦٥٦، ٦٥٧، ٦٥٨، ٦٥٩، ٦٦٠، ٦٦١، ٦٦٢، ٦٦٣، ٦٦٤، ٦٦٥، ٦٦٦، ٦٦٧، ٦٦٨، ٦٦٩، ٦٧٠، ٦٧١، ٦٧٢، ٦٧٣، ٦٧٤، ٦٧٥، ٦٧٦، ٦٧٧، ٦٧٨، ٦٧٩، ٦٨٠، ٦٨١، ٦٨٢، ٦٨٣، ٦٨٤، ٦٨٥، ٦٨٦، ٦٨٧، ٦٨٨، ٦٨٩، ٦٩٠، ٦٩١، ٦٩٢، ٦٩٣، ٦٩٤، ٦٩٥، ٦٩٦، ٦٩٧، ٦٩٨، ٦٩٩، ٧٠٠، ٧٠١، ٧٠٢، ٧٠٣، ٧٠٤، ٧٠٥، ٧٠٦، ٧٠٧، ٧٠٨، ٧٠٩، ٧١٠، ٧١١، ٧١٢، ٧١٣، ٧١٤، ٧١٥، ٧١٦، ٧١٧، ٧١٨، ٧١٩، ٧٢٠، ٧٢١، ٧٢٢، ٧٢٣، ٧٢٤، ٧٢٥، ٧٢٦، ٧٢٧، ٧٢٨، ٧٢٩، ٧٣٠، ٧٣١، ٧٣٢، ٧٣٣، ٧٣٤، ٧٣٥، ٧٣٦، ٧٣٧، ٧٣٨، ٧٣٩، ٧٤٠، ٧٤١، ٧٤٢، ٧٤٣، ٧٤٤، ٧٤٥، ٧٤٦، ٧٤٧، ٧٤٨، ٧٤٩، ٧٥٠، ٧٥١، ٧٥٢، ٧٥٣، ٧٥٤، ٧٥٥، ٧٥٦، ٧٥٧، ٧٥٨، ٧٥٩، ٧٦٠، ٧٦١، ٧٦٢، ٧٦٣، ٧٦٤، ٧٦٥، ٧٦٦، ٧٦٧، ٧٦٨، ٧٦٩، ٧٧٠، ٧٧١، ٧٧٢، ٧٧٣، ٧٧٤، ٧٧٥، ٧٧٦، ٧٧٧، ٧٧٨، ٧٧٩، ٧٨٠، ٧٨١، ٧٨٢، ٧٨٣، ٧٨٤، ٧٨٥، ٧٨٦، ٧٨٧، ٧٨٨، ٧٨٩، ٧٩٠، ٧٩١، ٧٩٢، ٧٩٣، ٧٩٤، ٧٩٥، ٧٩٦، ٧٩٧، ٧٩٨، ٧٩٩، ٨٠٠، ٨٠١، ٨٠٢، ٨٠٣، ٨٠٤، ٨٠٥، ٨٠٦، ٨٠٧، ٨٠٨، ٨٠٩، ٨١٠، ٨١١، ٨١٢، ٨١٣، ٨١٤، ٨١٥، ٨١٦، ٨١٧، ٨١٨، ٨١٩، ٨٢٠، ٨٢١، ٨٢٢، ٨٢٣، ٨٢٤، ٨٢٥، ٨٢٦، ٨٢٧، ٨٢٨، ٨٢٩، ٨٣٠، ٨٣١، ٨٣٢، ٨٣٣، ٨٣٤، ٨٣٥، ٨٣٦، ٨٣٧، ٨٣٨، ٨٣٩، ٨٤٠، ٨٤١، ٨٤٢، ٨٤٣، ٨٤٤، ٨٤٥، ٨٤٦، ٨٤٧، ٨٤٨، ٨٤٩، ٨٥٠، ٨٥١، ٨٥٢، ٨٥٣، ٨٥٤، ٨٥٥، ٨٥٦، ٨٥٧، ٨٥٨، ٨٥٩، ٨٦٠، ٨٦١، ٨٦٢، ٨٦٣، ٨٦٤، ٨٦٥، ٨٦٦، ٨٦٧، ٨٦٨، ٨٦٩، ٨٧٠، ٨٧١، ٨٧٢، ٨٧٣، ٨٧٤، ٨٧٥، ٨٧٦، ٨٧٧، ٨٧٨، ٨٧٩، ٨٨٠، ٨٨١، ٨٨٢، ٨٨٣، ٨٨٤، ٨٨٥، ٨٨٦، ٨٨٧، ٨٨٨، ٨٨٩، ٨٩٠، ٨٩١، ٨٩٢، ٨٩٣، ٨٩٤، ٨٩٥، ٨٩٦، ٨٩٧، ٨٩٨، ٨٩٩، ٩٠٠، ٩٠١، ٩٠٢، ٩٠٣، ٩٠٤، ٩٠٥، ٩٠٦، ٩٠٧، ٩٠٨، ٩٠٩، ٩١٠، ٩١١، ٩١٢، ٩١٣، ٩١٤، ٩١٥، ٩١٦، ٩١٧، ٩١٨، ٩١٩، ٩٢٠، ٩٢١، ٩٢٢، ٩٢٣، ٩٢٤، ٩٢٥، ٩٢٦، ٩٢٧، ٩٢٨، ٩٢٩، ٩٣٠، ٩٣١، ٩٣٢، ٩٣٣، ٩٣٤، ٩٣٥، ٩٣٦، ٩٣٧، ٩٣٨، ٩٣٩، ٩٤٠، ٩٤١، ٩٤٢، ٩٤٣، ٩٤٤، ٩٤٥، ٩٤٦، ٩٤٧، ٩٤٨، ٩٤٩، ٩٥٠، ٩٥١، ٩٥٢، ٩٥٣، ٩٥٤، ٩٥٥، ٩٥٦، ٩٥٧، ٩٥٨، ٩٥٩، ٩٦٠، ٩٦١، ٩٦٢، ٩٦٣، ٩٦٤، ٩٦٥، ٩٦٦، ٩٦٧، ٩٦٨، ٩٦٩، ٩٧٠، ٩٧١، ٩٧٢، ٩٧٣، ٩٧٤، ٩٧٥، ٩٧٦، ٩٧٧، ٩٧٨، ٩٧٩، ٩٨٠، ٩٨١، ٩٨٢، ٩٨٣، ٩٨٤، ٩٨٥، ٩٨٦، ٩٨٧، ٩٨٨، ٩٨٩، ٩٩٠، ٩٩١، ٩٩٢، ٩٩٣، ٩٩٤، ٩٩٥، ٩٩٦، ٩٩٧، ٩٩٨، ٩٩٩، ١٠٠٠، ١٠٠١، ١٠٠٢، ١٠٠٣، ١٠٠٤، ١٠٠٥، ١٠٠٦، ١٠٠٧، ١٠٠٨، ١٠٠٩، ١٠١٠، ١٠١١، ١٠١٢، ١٠١٣، ١٠١٤، ١٠١٥، ١٠١٦، ١٠١٧، ١٠١٨، ١٠١٩، ١٠٢٠، ١٠٢١، ١٠٢٢، ١٠٢٣، ١٠٢٤، ١٠٢٥، ١٠٢٦، ١٠٢٧، ١٠٢٨، ١٠٢٩، ١٠٣٠، ١٠٣١، ١٠٣٢، ١٠٣٣، ١٠٣٤، ١٠٣٥، ١٠٣٦، ١٠٣٧، ١٠٣٨، ١٠٣٩، ١٠٤٠، ١٠٤١، ١٠٤٢، ١٠٤٣، ١٠٤٤، ١٠٤٥، ١٠٤٦، ١٠٤٧، ١٠٤٨، ١٠٤٩، ١٠٥٠، ١٠٥١، ١٠٥٢، ١٠٥٣، ١٠٥٤، ١٠٥٥، ١٠٥٦، ١٠٥٧، ١٠٥٨، ١٠٥٩، ١٠٦٠، ١٠٦١، ١٠٦٢، ١٠٦٣، ١٠٦٤، ١٠٦٥، ١٠٦٦، ١٠٦٧، ١٠٦٨، ١٠٦٩، ١٠٧٠، ١٠٧١، ١٠٧٢، ١٠٧٣، ١٠٧٤، ١٠٧٥، ١٠٧٦، ١٠٧٧، ١٠٧٨، ١٠٧٩، ١٠٨٠، ١٠٨١، ١٠٨٢، ١٠٨٣، ١٠٨٤، ١٠٨٥، ١٠٨٦، ١٠٨٧، ١٠٨٨، ١٠٨٩، ١٠٩٠، ١٠٩١، ١٠٩٢، ١٠٩٣، ١٠٩٤، ١٠٩٥، ١٠٩٦، ١٠٩٧، ١٠٩٨، ١٠٩٩، ١١٠٠، ١١٠١، ١١٠٢، ١١٠٣، ١١٠٤، ١١٠٥، ١١٠٦، ١١٠٧، ١١٠٨، ١١٠٩، ١١١٠، ١١١١، ١١١٢، ١١١٣، ١١١٤، ١١١٥، ١١١٦، ١١١٧، ١١١٨، ١١١٩، ١١٢٠، ١١٢١، ١١٢٢، ١١٢٣، ١١٢٤، ١١٢٥، ١١٢٦، ١١٢٧، ١١٢٨، ١١٢٩، ١١٣٠، ١١٣١، ١١٣٢، ١١٣٣، ١١٣٤، ١١٣٥، ١١٣٦، ١١٣٧، ١١٣٨، ١١٣٩، ١١٤٠، ١١٤١، ١١٤٢، ١١٤٣، ١١٤٤، ١١٤٥، ١١٤٦، ١١٤٧، ١١٤٨، ١١٤٩، ١١٥٠، ١١٥١، ١١٥٢، ١١٥٣، ١١٥٤، ١١٥٥، ١١٥٦، ١١٥٧، ١١٥٨، ١١٥٩، ١١٦٠، ١١٦١، ١١٦٢، ١١٦٣، ١١٦٤، ١١٦٥، ١١٦٦، ١١٦٧، ١١٦٨، ١١٦٩، ١١٧٠، ١١٧١، ١١٧٢، ١١٧٣، ١١٧٤، ١١٧٥، ١١٧٦، ١١٧٧، ١١٧٨، ١١٧٩، ١١٨٠، ١١٨١، ١١٨٢، ١١٨٣، ١١٨٤، ١١٨٥، ١١٨٦، ١١٨٧، ١١٨٨، ١١٨٩، ١١٩٠، ١١٩١، ١١٩٢، ١١٩٣، ١١٩٤، ١١٩٥، ١١٩٦، ١١٩٧، ١١٩٨، ١١٩٩، ١٢٠٠، ١٢٠١، ١٢٠٢، ١٢٠٣، ١٢٠٤، ١٢٠٥، ١٢٠٦، ١٢٠٧، ١٢٠٨، ١٢٠٩، ١٢١٠، ١٢١١، ١٢١٢، ١٢١٣، ١٢١٤، ١٢١٥، ١٢١٦، ١٢١٧، ١٢١٨، ١٢١٩، ١٢٢٠، ١٢٢١، ١٢٢٢، ١٢٢٣، ١٢٢٤، ١٢٢٥، ١٢٢٦، ١٢٢٧، ١٢٢٨، ١٢٢٩، ١٢٣٠، ١٢٣١، ١٢٣٢، ١٢٣٣، ١٢٣٤، ١٢٣٥، ١٢٣٦، ١٢٣٧، ١٢٣٨، ١٢٣٩، ١٢٤٠، ١٢٤١، ١٢٤٢، ١٢٤٣، ١٢٤٤، ١٢٤٥، ١٢٤٦، ١٢٤٧، ١٢٤٨، ١٢٤٩، ١٢٥٠، ١٢٥١، ١٢٥٢، ١٢٥٣، ١٢٥٤، ١٢٥٥، ١٢٥٦، ١٢٥٧، ١٢٥٨، ١٢٥٩، ١٢٦٠، ١٢٦١، ١٢٦٢، ١٢٦٣، ١٢٦٤، ١٢٦٥، ١٢٦٦، ١٢٦٧، ١٢٦٨، ١٢٦٩، ١٢٧٠، ١٢٧١، ١٢٧٢، ١٢٧٣، ١٢٧٤، ١٢٧٥، ١٢٧٦، ١٢٧٧، ١٢٧٨، ١٢٧٩، ١٢٨٠، ١٢٨١، ١٢٨٢، ١٢٨٣، ١٢٨٤، ١٢٨٥، ١٢٨٦، ١٢٨٧، ١٢٨٨، ١٢٨٩، ١٢٩٠، ١٢٩١، ١٢٩٢، ١٢٩٣، ١٢٩٤، ١٢٩٥، ١٢٩٦، ١٢٩٧، ١٢٩٨، ١٢٩٩، ١٣٠٠، ١٣٠١، ١٣٠٢، ١٣٠٣، ١٣٠٤، ١٣٠٥، ١٣٠٦، ١٣٠٧، ١٣٠٨، ١٣٠٩، ١٣١٠، ١٣١١، ١٣١٢، ١٣١٣، ١٣١٤، ١٣١٥، ١٣١٦، ١٣١٧، ١٣١٨، ١٣١٩، ١٣٢٠، ١٣٢١، ١٣٢٢، ١٣٢٣، ١٣٢٤، ١٣٢٥، ١٣٢٦، ١٣٢٧، ١٣٢٨، ١٣٢٩، ١٣٣٠، ١٣٣١، ١٣٣٢، ١٣٣٣، ١٣٣٤، ١٣٣٥، ١٣٣٦، ١٣٣٧، ١٣٣٨، ١٣٣٩، ١٣٤٠، ١٣٤١، ١٣٤٢، ١٣٤٣، ١٣٤٤، ١٣٤٥، ١٣٤٦، ١٣٤٧، ١٣٤٨، ١٣٤٩، ١٣٥٠، ١٣٥١، ١٣٥٢، ١٣٥٣، ١٣٥٤، ١٣٥٥، ١٣٥٦، ١٣٥٧، ١٣٥٨، ١٣٥٩، ١٣٦٠، ١٣٦١، ١٣٦٢، ١٣٦٣، ١٣٦٤، ١٣٦٥، ١٣٦٦، ١٣٦٧، ١٣٦٨، ١٣٦٩، ١٣٧٠، ١٣٧١، ١٣٧٢، ١٣٧٣، ١٣٧٤، ١٣٧٥، ١٣٧٦، ١٣٧٧، ١٣٧٨، ١٣٧٩، ١٣٨٠، ١٣٨١، ١٣٨٢، ١٣٨٣، ١٣٨٤، ١٣٨٥، ١٣٨٦، ١٣٨٧، ١٣٨٨، ١٣٨٩، ١٣٩٠، ١٣٩١، ١٣٩٢، ١٣٩٣، ١٣٩٤، ١٣٩٥، ١٣٩٦، ١٣٩٧، ١٣٩٨، ١٣٩٩، ١٤٠٠، ١٤٠١، ١٤٠٢، ١٤٠٣، ١٤٠٤، ١٤٠٥، ١٤٠٦، ١٤٠٧، ١٤٠٨، ١٤٠٩، ١٤١٠، ١٤١١، ١٤١٢، ١٤١٣، ١٤١٤، ١٤١٥، ١٤١٦، ١٤١٧، ١٤١٨، ١٤١٩، ١٤٢٠، ١٤٢١، ١٤٢٢، ١٤٢٣، ١٤٢٤، ١٤٢٥، ١٤٢٦، ١٤٢٧، ١٤٢٨، ١٤٢٩، ١٤٣٠، ١٤٣١، ١٤٣٢، ١٤٣٣، ١٤٣٤، ١٤٣٥،

(ابن عدی) । गाता है **عَزَّوَجَلَّ** तुम पर रहमत भेजेगा । **مُذَّب** पर दुरुद शरीफ पढो, **اَللّٰهُ** तुम पर रहमत भेजेगा । **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** फ़रमाने मुस्तफ़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया !
आमिना के लाल, महबूबे रब्बे जुल जलाल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** का
अज़मो इस्तिक़लाल किस क़दर ज़बर दस्त था । दुन्या की कोई ताक़त आप
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ को दा'वते इस्लाम से न हटा सकती थी ।

वोह बिजली का कड़का था या सौते हादी

अरब की ज़मीं जिस ने सारी हिला दी

बदनाम करने की साज़िश

मन्कूल है कि अहले कुरैश ने एक इज़्लास किया जिस में इस
बात पर इज़हारे तश्वीश किया गया कि अब हूज का मौसिमे बहार आ रहा
है और लोग दुन्या के गोशे गोशे से यहां आएंगे, चूंकि सरकारे दो आ़लम
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ **खुल्लम खुल्ला** नेकी की दा'वत दे रहे हैं लिहाज़ा
लोग इन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** को सुनेंगे और सुनेंगे तो मानेंगे भी और
आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** के गिरवीदा हो जाएंगे । लिहाज़ा इस की रोक
थाम की एक ही सूरत है और वोह येह कि हम **शाहे ख़ैरुल अनाम**
صَلَّى اللّٰهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ को ख़ूब बदनाम कर दें ताकि लोग आप
صَلَّى اللّٰهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ से **मुतनफ़िफ़र** हो जाएं और सिरे से आप
صَلَّى اللّٰهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ की बात ही न सुनें और ज़ाहिर है जब बात ही न
सुनेंगे तो माइल भी न होंगे । चुनान्चे इस मश्वरे के बा'द कुफ़फ़ारे ना
हन्ज़ार ने आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ** को **(مَعَاذَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ)** मजनून, काहिन
और जादूगर मशहूर करना शुरू कर दिया । लेकिन कुरबान जाइये !
मुबल्लिगो आ'ज़म, नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मुहूतशम
صَلَّى اللّٰهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ की बुलन्द हिम्मती पर कि आप

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन की वाहियात व खुराफ़ात से ज़रा बराबर न घबराए मुसल्लसल नेकी की दा'वत में मशगूल ही रहे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ख़िलाफ़ बदनाम करने की बा काइदा मुहिम चलाई गई फिर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के पाए सबात को ज़रा बराबर लगिज़श न आई, मुसल्लसल **नेकी की दा'वत** का काम जारी ही रखा। इस से हमें भी येह दर्स मिला कि ख़्वाह कोई इल्ज़ाम डाले, मज़ाक़ उड़ाए, बद अल्काबी से पुकारे, हमारी आवाज़ की नक़ल उतारे, कैसा ही सताए मगर हमें सुन्नतों भरा **मदनी माहोल** नहीं छोड़ना चाहिये, सुन्नतों पर अमल करते हुए दूसरों तक भी **नेकी की दा'वत** पहुंचाते रहना चाहिये। जो हिम्मत हारे बिगैर जानिबे मन्ज़िल रवां दवां रहता है बिल आख़िर मन्ज़िल पा ही लेता है।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ है

किये जाओ तै तुम तरक्की का जीना

दिल का मरीज़ ठीक हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत का जज़्बा बढ़ाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी काफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये। आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक "मदनी बहार" पेशे ख़िदमत है : एक इस्लामी भाई को दिल की तक्लीफ़ हुई, डोक्टर ने बताया कि आप के दिल की दो नालियां बन्द हैं, एन्जियोग्राफी (**ANGIOGRAPHY**) करवा

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

लीजिये। इलाज पर हजारहा रुपै का खर्च आता था, येह बेचारे ग़रीब घबराए हुए थे, एक इस्लामी भाई ने उन पर इन्फ़रादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी काफ़िले में सफ़र कर के वहां दुआ मांगने की तरगीब दिलाई, चुनान्चे वोह तीन दिन के लिये मदनी काफ़िले के मुसाफ़िर बने, वापसी पर तबीअत को बेहतर पाया। जब टेस्ट करवाए तो तमाम रिपोर्टें दुरुस्त थीं, डोक्टर ने हैरत से पूछा कि तुम्हारे दिल की दोनों बन्द नालियां खुल चुकी हैं, आख़िर येह कैसे हुवा ? जवाब दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी काफ़िले में सफ़र कर के दुआ करने की बरकत से मुझे दिल के मोहलिक मरज़ से नजात मिल गई है।

लूटने रहमतें काफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें काफ़िले में चलो
दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे राहतें काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

आह ! सद आह ! हमारे दिलों के ताजदार, दो अ़लम के सरदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्लाम के परचार की खातिर कैसे कैसे मजालिम सहे, जौरो जफ़ा की तेज व तुन्द आंधियों में भी कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी जगह से न हिले, कुफ़ारे बदकार के जुल्मो सितम की एक दास्तान पढ़िये और तड़पिये :

कुफ़ार के नरगे में.....

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शोरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيْمُ फ़रमाते हैं : कुफ़ारे ना हन्जार ने एक बार दो जहां के ताजदार, नबियों के सरदार, महबूबे परवर्द गार

फ़रमाने मुस्फ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क्रियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को घेर लिया वोह सरकारे नामदार
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को घसीटते और धक्के मारते और कहते जाते थे
 कि तुम ही वोह शख्स हो जो सिर्फ़ एक मा'बूद की इबादत का हुक्म देते
 हो। हज़रते मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ (जो कि उन दिनों काफ़ी कम
 उम्र थे) फ़रमाते हैं कि इतने में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मर्दाना वार आगे बढ़े और कुफ़फ़ार को मारते, पीटते,
 गिराते, हटाते सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तक जा पहुंचे और
 सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को उन ज़ालिमों के नरगे से निकाल लिया।
 उस वक़्त सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की मुबारक ज़बान पर
 पारह 24 सूरतुल मुअ्मिन की आयत नम्बर 28 जारी थी :

اتَّقُوا رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ

(तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह
 कहता है कि मेरा रब अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) है और बेशक वोह रोशन निशानियां
 तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से लाए।) अब कुफ़फ़ारे बद किरदार
 ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को पकड़ लिया। उन
 के सरे अक्दस और दाढ़ी मुबारक के बहुत से बाल नोच डाले और मार
 मार कर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को शदीद ज़ख़मी कर दिया।

(شَرَحُ الرُّزْقَانِي عَلَى التَّوَاهِبِ اللَّذِيئِيَّةِ ج ١ ص ٤٦٨-٤٧٠)

बहर ह्वाल कुफ़फ़ारे जफ़ाकार ने बड़ा ज़ोर लगाया, ख़ूब धम्कियां
 दीं कि किसी तरह भी सरकारे अली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस्लाम
 के परचार से बाज़ आ जाएं मगर हमारे प्यारे और मीठे मीठे आका
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दीने इस्लाम का काम करते ही रहे। जूँ जूँ काम

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोजे कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर जियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

बढ़ता रहा तूं तूं कुफ़ारे बद् अत्वार के गैजो गज़ब में भी इज़ाफ़ा होता रहा। वोह हर साअत माहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अजिय्यत पहुंचाने की ताक में रहते थे।

चादर का फन्दा

कुफ़ारे नाबकार एक बार का'बए पुर अन्वार के साए में बैठे हुए थे और सरकारे आलम मदार, दो जहां के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (मक़ामे इब्राहीम الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के करीब) मशगूले नमाज़ थे। उक्बा बिन अबी मुईत नामी काफ़िर ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की गरदन मुबारक में चादर का फन्दा डाल कर सख़्ती के साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का मुबारक गला घूटना शुरू किया। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ दौड़े आए और उसे (या'नी उक्बा बिन अबी मुईत को) पीछे हटाया और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की मुबारक ज़बान पर पारह 24 सूरतुल मुअ्मिन की आयत नम्बर 28 जारी थी :

أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ^ط

(तरजमए कन्ज़ुल इम़ान : क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है कि मेरा रब अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) है और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से लाए।)

(صحيح البخارى ج 3 ص 316 حديث 4810 دارالكتب العلمية بيروت)

एक रोज़ दो जहां के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने काशानए अत्हर से बाहर तशरीफ़ लाए आप صَلَّى اللهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को रास्ते में जो भी काफ़िर मिलता ख़्वाह गुलाम होता या आज़ाद वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तक्लीफ़ देता। (السِّيَرَةُ النَّبَوِيَّةُ لِابْنِ هَشَامٍ ص 113)

आह ! इमामुल आबिदीन, सुल्तानुस्साजिदीन,

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शाश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सय्यिदुस्सालिहीन, सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दास्ताने ग़म निशान पर दिल खून रोता है। इस क़दर मजालिम सहने के बा वुजूद भी वल्वलए तब्लीगे इस्लाम और नमाज़ों का एहतिमाम अल्लाह ! अल्लाह !

हरम की सरज़मीं पर आप पढ़ते थे नमाज़ अक्सर
हमेशा उस घड़ी की ताक में रहते थे बद गोहर
कोई आका की गरदन घूंटता था कस के चादर में
कोई बद बख़्त पथर मारता था आप के सर में

ऊंटनी का बच्चादान

एक दिन हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का'बए मुअज़्ज़मा के करीब नमाज़ पढ़ रहे थे और कुफ़ारे कुरैश एक जगह बैठे हुए थे। उन में से एक ने कहा कि तुम इन को देख रहे हो ? फिर बोला : तुम में कौन ऐसा है जो फुलां कबीले से ज़ब्द कर्दा ऊंटनी का बच्चादान उठा लाए और जब यह सज्दे में जाएं तो इन के कन्धों पर रख दे ? इस पर बद बख़्त उक्बा बिन अबी मुईत्त उठ कर चल दिया और बच्चादान (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) ला कर रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दोनों मुबारक शानों के दरमियान रख दी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इसी हाल में रहे और सरे मुबारक सज्दे से न उठाय़ा और वोह सब के सब कहकहे मार कर हंसते रहे, यहां तक कि ख़ातूने जन्नत सय्यिदह फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (जिन की उम्र उस वक़्त ब मुशिकल आठ साल थी) आई और उन्होंने ने हबीबे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की पुश्ते अत्हर से उस गन्दगी को उठा कर फेंका। तब सरकारे नामदार

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क्रियामत के दिन में उस से मुसा-फ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشكوال)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपना सरे अक्दस उठाया और अपने परवर्द गार एَزْوَجَلَّ के दरबार में अर्ज गुज़ार हुए। या अल्लाह ! इन कुरैशियों को पकड़। या अल्लाह ! तू अबू जहल बिन हश्शाम, उतबा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उतबा, उमय्या बिन ख़लफ़ और उक़बा बिन अबी मुईत को पकड़। इस हदीसे पाक के रावी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने इन को बद्र के रोज़ मक्तूल (या'नी क़ल्ल शुदा) देखा। वोह बद्र के कूएं में औंधे मुंह गिरे हुए थे।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ١٠٢ حَدِيثٌ ٤٤٠)

न उठ सकेगा क्रियामत तलक खुदा की क़सम

कि जिस को तुम ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़िताम की तरफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशाए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्वत की उस ने मुझ से महब्वत की और जिस ने मुझ से महब्वत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (مَشْكَاتُ الْمَصَابِيحِ، ج ١ ص ٥٠٠ حَدِيثٌ ١٧٠ دَارُ الْكُتُبِ الْعِلْمِيَّةِ بِيْرُوت)

सुन्नतें आम करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“या नबिय्यल्लाह” के 9 हुरूफ़ की निस्बत से

नाखुन काटने के 9 मदनी फूल

﴿1﴾ जुमुआ के दिन नाखुन काटना मुस्तहब है। हां अगर ज़ियादा बढ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ السَّلَامُ : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

गए हों तो जुमुआ का इन्तिज़ार न कीजिये (तुर्मुख्तार ज ९ व २६८) **सदरुशरीअह, बदरुत्तरीक़ह** मौलाना अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मन्कूल है : जो **जुमुआ** के रोज़ नाखुन तरश्वाए (काटे) **अल्लाह** तआला उस को दूसरे जुमुआ तक बलाओं से महफूज़ रखेगा और तीन दिन जाइद या'नी दस दिन तक । एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ के दिन नाखुन तरश्वाए (काटे) तो **रहमत आएगी और गुनाह जाएंगे** (तुर्मुख्तार, रद़ालमुह्तार, बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 225,226) ﴿2﴾ हाथों के नाखुन काटने के मन्कूल तरीके का खुलासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ कर के तरतीब वार छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाखुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये । अब उलटे हाथ की छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये । अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाखुन काटा जाए । (तुर्मुख्तार ज ९ व ६७०, अख़िया'एलुम ज १ व १९३) ﴿3﴾ पाउं के नाखुन काटने की कोई तरतीब मन्कूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंग्लियां (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये फिर उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ कर के छुंग्लियां समेत नाखुन काट लीजिये । (अَيْضًا) ﴿4﴾ जनाबत की हालत (या'नी गुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाखुन काटना मक्रूह है । (عالمگیری ج ५ ص ३०८) ﴿5﴾ दांत से नाखुन काटना मक्रूह है और इस से बरस या'नी **कोढ़** के मरज़ का अन्देशा है । (अَيْضًا) ﴿6﴾ नाखुन काटने के बा'द उन को दफ़न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी हरज नहीं । (अَيْضًا) ﴿7﴾ नाखुन का तराशा (या'नी कटे हुए नाखुन) **बैतुल ख़ला** या गुस्ल ख़ाने में डाल देना मक्रूह है कि इस से **बीमारी** पैदा होती है । (अَيْضًا)

फरमाने मुस्फ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ : मुझ पर दुरूद शरीफ पढ़ो, अल्लाह غُرُطَل तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

«8» बुध के दिन नाखुन नहीं काटने चाहियें कि बरस या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस (39) दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से जाइद हो जाएंगे तो इस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से जाइद नाखुन रखना ना जाइज व मकरूहे तहरीमी है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विख्या मुखर्ज़ा जिल्द 22 सफ़हा 574, 685 मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये) «9» लम्बे नाखुन शैतान की निशस्त गाह हैं या'नी इन पर शैतान बैठता है। (اتحاف السادة للريدي ج ٢ ص ٦٥٣)

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ दो कुतुब “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 (312 सफ़हात) नीज 120 सफ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब” हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ दा'वते इस्लामी के मदनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें काफ़िले में चलो लूटने रहमतें काफ़िले में चलो

होंगी हल मुशिकलें काफ़िले में चलो पाओगे बरकतें काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक्रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुशतमिल पेम्फ़लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यत सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज कम एक अदद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ तबलीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में व कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमे'रात इशा की नमाज़ के बाद आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इन्तिमाअ में रिवाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ सारी रात गुजारने की मदनी इल्तिगा है। आशिकाने रसूल के मदनी काफिलों में व निव्यते सबाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोजाना फिके मदीना के ज़रीए मदनी इन्-आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के गिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीगिये, اِن شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और इम्मान की हिफ़ाज़त के लिये कुहने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِن شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये मदनी इन्-आमात पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये मदनी काफिलों में सफ़र करना है। اِن شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ



**Maktabatul
Madina**

- 📍 **Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai** ☎️ **9022177997, 9320558372**
- 📍 **Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad** ☎️ **9327168200**
- 📍 **421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi**
- ☎️ **011-23284560, 8178862570** 📞 **For Home Delivery: 9978626025** ^{TEC App}
- 📧 **feedbackmmhind@gmail.com** 🌐 **www.dawateislamihind.net**